संताल परगना के क्रांतिकारी एवं पत्रकार पं० सखाराम गणेश देउसकर एवं उनकी अमर कृति 'देशेरकथा'

प्रो० वकूल रस्तोगी
मेरठ कॉलिज, मेरठ

रामानन्द कुमार पासवान
शोधार्थी
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
ईमेलः ramanandbed@gmail.com

साराश

संताल परगना के देवघर जिला के पास 'करौं' नामक गाँव में सखाराम गणेश देउसकर का जन्म 17 दिसम्बर, 1869 को हुआ था। मराठी मूल के देउसकर के पूर्वज महाराष्ट्र के रत्नागिरि जिले में शिवाजी के आलबान नामक किले के निकट देउस गाँव के निवासी थे। 18वीं सदी में मराठा शक्ति के विस्तार के समय इनके पूर्वज महाराष्ट्र के देउस गाँव से आकर 'करौं' में बस गए।' 'करौं' ग्राम निवासी पं० सखाराम गणेश देउसकर ने सर्वप्रथम सन् 1904 ई. में अपनी महत्वपूर्ण कृति 'देशेरकथा' 'बांग्ला' प्रकाशित की थी। इस पुस्तक में गुलाम भारत की विवशता और उत्पीड़न का ऐसा चित्र उपस्थित किया गया था कि यह कृति युवाओं के दिलों में बस गई।' इसके शब्द स्वतंत्रता चाहने वाले युवाओं के होंठों पर चढ़ गए। उन दिनों ऐसे युवा 'अनुशीलन समिति' की गुप्त शाखाओं में विभिन्न शास्त्रीय श्लोकों का पाठ कर अखण्ड राष्ट्रभक्ति की शपथ लेते थे। अब वहाँ 'गीता' की तरह 'देशेरकथा' का पाठ होने लगा। कोई पत्रकार अपने समय की ज्वलंत समस्याओं से कैसे आम जनमानस, ख़ासकर परिवर्तन की शक्ति और समझ रखने वाली युवा पीढ़ी को जोड़ सकता है, संताल परगना की पृष्ठभूमि में पं० सखाराम इसके सबसे योग्य उदाहरण हैं। तत्कालीन बुद्धिजीवी वर्ग ने भी उनकी पुस्तक की विषय वस्तु, भाषा और शिल्प की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की।

मुख्य बिन्दु

आलबान, देशेरकथा, अनुशीलन समिति, सुदर्शन, व्यंकटेश समाचार, बगेर अंगच्छेद, हितवार्ता।

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 23.02.2023
Approved: 21.03.2023

प्रो० वकूल रस्तोगी,
रामानन्द कुमार पासवान

संताल परगना के क्रांतिकारी एवं पत्रकार पं० सखाराम गणेश देउसकर एवं उनकी अमर कृति 'देशेरकथा'

RJPP Oct.22-Mar.23,
Vol. XXI, No. I,

pp.132-135
Article No. 18

Online available at *:*
https://anubooks.com/rjpp-2023-vol-xxi-no-1

सन् 1907 ई० में 'देशेरकथा' का एक अलग खण्ड 'देशेरकथा– परिशिष्ट' नाम से प्रकाशित हुआ। यह पुस्तक निम्नलिखित उप–शीर्षकों में बँटी थी– कलकारखाना अवनति, 1901 सालेर आदम शुमारी, देशी राजन्य उत्तमर्ण, शिक्षा विषयक तालिका, रेलेर हिसाब, बंगे पाश्चात्य वर्गीकृशकेर अवस्था, मिशनरी दिगेर कुसंस्कार, सामारिक व्यय, देशीय राजन्य बृंद, देशी राजगणेर तालिका, लवणेर राजस्व, देशेर आय–व्यय।[3]

प्रथम संस्करण की कुल 10,000 प्रतियाँ छापी गई थी जो बड़ी तेज़ी से बिक गई। सन् 1905 ई० में 2000 प्रतियाँ द्वितीय संस्करण में निकला। फिर मात्र चार माह के अंतराल में 5000 प्रतियों का तृतीय संस्करण भी निकला जो बड़ी गर्मजोशी से पाठकों द्वारा समाप्त हुआ। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि पुस्तक–लेखक पं० सखाराम हर संस्करण में कुछ नई सामग्री जोड़ते जाते थे जिससे पुस्तक का आकार बढ़ता जाता था, किन्तु उसकी कीमत नहीं बढ़ाई जाती थी, बल्कि दो बार घटा दी गई।[4]

सन् 1908 ई0 में 'देशेरकथा' का हिन्दी अनुवाद मुंबई की श्री खेमराज श्रीकृष्णदास नामक प्रकाशन संस्था ने प्रकाशित किया। अनुवादक थे 'सुदर्शन' हिन्दी पत्रों के संपादक पं० माधव प्रसाद मिश्र एवं 'व्यंकटेश समाचार' हिन्दी संस्करण, मुंबई के सम्पादक अमृतलाल चक्रवर्ती। 'देशेरकथा' के हिन्दी अनुवाद के प्रकाशन के पहले संपादक एवं पं० सखाराम के बीच हुई बातचीत दरअसल पत्राकारिता का आदर्श बिन्दु है। प्रकाशक ने पं० सखाराम से पूछा–

'क्या आप इस पुस्तक से लाभवान होना चाहते हैं? पं० सखाराम ने उत्तर दिया–'अभी इस देश का ऐसा सौभाग्य कहाँ जो ऐसे ग्रंथ का लोग आदर करें और धन का लाभ हो? यह ठीक है पर मैंने धन–प्राप्ति की इच्छा से यह पुस्तक नहीं लिखी है। यदि धन का लोभ होता तो कोई चटकीला उपन्यास लिखता, पर, मेरा उद्देश्य यह है कि देश की दुर्दशा का लोगों को किसी तरह ज्ञान हो जाय और परम्परा से सर्वसाधरण में यह बात फैल जाय। धन–प्राप्ति की मुझे इससे कोई आशा नहीं है। अभी तो लागत भी वसूल नहीं हुई है। इसके दूसरे संस्करण की तो आशा दुराशा मात्रा है।'[5]

श्री खेमराज श्रीकृष्ण दास प्रकाशन संस्था के मालिक बाबू रूडलमल जी ने पं० सखाराम को दिलासा देते हुए कहा–'इससे आप यशस्वी तो होंगे ही और काल पाकर इसका आदर भी होगा।'[6]

माधव प्रसाद मिश्र ने लिखा है कि– 'देखते ही देखते हवा बदल गई। जिस पुस्तक की लागत तक के वसूल होने में ग्रंथकार और मुझे आंशका थी, उसकी थोड़े ही दिनों में हाथों–हाथ सभी प्रतियां बँट गईं। बंगाल के टुकड़े होते ही स्वदेशी–आंदोलन उपस्थित हुआ जिसमें उस पुस्तक के प्रदीप्त वाक्यों ने भी अपना प्रभाव दिखाया। यह कहना तो छोटा मुँह बड़ी बात समझी जायेगी कि स्वदेशी–आंदोलन इसी पुस्तक का प्रतिफल है, परन्तु इसमें कोई संदेह नहीं कि इस आंदोलन की प्रज्ज्वलित वर्ष में उसने प्राकृति का काम अवश्य किया, बहुत सही है।'[7]

अर्थशास्त्री अश्विनी कुमार, दत्त 'देशेरकथा' के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कालीघाट, कलकत्ते के अपने एक वक्तव्य में कहा था– 'इतने दिनों तक सरस्वती की आराधना करने पर भी बंगालियों को मातृभाषा में ऐसा उपयोगी ग्रंथ लिखना न आया जैसा एक परिणामदर्शी महाराष्ट्रीय युवक ने लिख दिखाया। बंगालियोंने उस ग्रंथ 'देशेरकथा' को पढ़ा और अपने देश की अवस्था और अपने कर्त्तव्य का विचार किया।''

सन् 1908 ई० में 'देशेरकथा' का पंचम संस्करण प्रकाशित किया गया। प्रतियों की संख्या 3000 थी। पृष्ठ संख्या लगभग 400 थी। इस संस्करण में एक नया अध्याय जोड़ा गया– 'बंगेर अंगच्छेद'। इस अध्याय में बंगालियों की संख्या सीमित कर उन्हें अल्पसंख्यक बनाने, उनके सांस्कृतिक प्रभाव को कम करने के साथ धार्मिक आधार पर बंगाल के विभाजन के प्रशासनिक मंसूबों की धज्जियाँ उड़ाई गई थी। बंग–बंग की योजना लॉर्ड कर्जन के शैतानी दिमाग की उपज थी। अतः 'देशेरकथा' में 'बंगेर अंगच्छेद' जैसा कठोर आलोचनात्मक अध्याय जुड़ जाने से लॉर्ड कर्ज़न को क़ाफी बुरा लगा। उसने प्रशासनिक निर्णय के आलोक में इसे पुस्तक विशेष द्वारा किया जाने वाला अनाधिकृत अतिक्रमण माना। इस पुस्तक का पाठकों द्वारा पढ़ा जाना उसने सरकार के विरुद्ध अशांति की आशंका के रूप में लिया। इस आशंका को निर्मूल करने के लिए सरकार द्वारा पुस्तक को प्रतिबंधित किया जाना अनिवार्य हो गया। फलस्वरूप लॉर्ड कर्जन की पहल पर दिनांक 22.09.1910 को नीचे लिखी अधिसूचना के द्वारा सरकार ने इस पुस्तक की सारी प्रतियों को जब्त करने का आदेश दे दिया–

Political Notification No. 2840 P.D. The 22nd September, 1910 where as it Appears to the Lieutenant Governor that a Bengali book entitled "Desher-katha" written and published by Sakharam Ganesh Deusker Contains words of the nature described in section-4 sub-section(1), of the Indian press Act (1 of 1940) in as much as they have a tendency to excite dissatisfaction towards his Majesty or the Government by law in British India.

Now therefore, in exercise of power conferred by section-12 sub-section (1) of the said Act, the Lieutenant Governor have by dares all copies of the said book forfeited to his Majesty. S/D.J. E.V. LEVINGE

Off. G. Chief Secretary to the Government of Bengal[8]

उन दिनों 'हितवादी' के प्रबंधकों द्वारा एक हिन्दी अख़बार 'हितवार्त्ता' का प्रकाशन किया जा रहा था जिसके सम्पादक पंडित बाबूराव विष्णु पराड़कर थे। उनकी सलाह पर पं० सखाराम ने 'देशेरकथा' की ज़ब्ती संबंधी स्वेच्छाचारी शासकीय आदेश के विरुद्ध कलकत्ता हाईकोर्ट में एक मुकदमा दायर कर दिया। इसी मध्य उनकी पत्नी एवं एकमात्र पुत्र बालाजी का निधन हो गया। समय के इस निर्मम प्रहार से पं० सखाराम के कोमल हृदय पर गहरी चोट लगी। अपने नग्न हृदय और जर्जर शरीर के साथ वे कलकत्ता से वापस संताल परगना लौट आए। अपनी जन्मभूमि 'करौं' में उन्होंने मन, शरीर और समय की गति पर नियंत्रण का काफी यत्न किया। पर, लगता है वे दुनिया के रंगमंच पर अपनी भूमिका निभा चुके थे। अंतिम समय में वे देवघर आ गए। यहीं बाबा बैद्यनाथ के निकट एक मकान में दिनांक 23 नवम्बर, 1912 ई0 को उनका देहांत हो गया।[9] वे तो इस दुनिया से चले गए, पर अपने पीछे पत्रकारिता की ऐसी अक्षय कीर्ति छोड़ गए कि 'संताल परगना में स्वतंत्रता–संग्राम और पत्रकारों की भूमिका' विषयक कोई भी इतिहास–लेखन उनके पुण्य–स्मरण के बिना अधूरा रहेगा। संताल परगना के स्वतंत्रता संग्राम में अपनी शानदार लेखनी से उन्होंने जो कुछ लिखा, वह युगों–युगों तक पत्थर पर अंकित शिलालेख की तरह अक्षय और अमिट रहेगा।[10] तभी तो मधुपुर के शायर जनाब अख़्तर मधुपुरी ने लिखा था–

'तब्बसुम उनके होंठो की, तड़प मेरे दिल की।
कहाँ बिजली चमकती है, कहाँ मालूम होती है।'[11]

निष्कर्ष

स्वतंत्रता–संग्राम के इतिहास में पं० सखाराम गणेश देउसकर ने जो भूमिका निभाई, उसका प्रभाव हम तीस के दशक तक विभिन्न पत्रकारों के व्यक्तित्व और कृतित्व में देखते हैं। बीस और तीस के दशक में स्वतंत्रता सेनानी स्वयं एक जागरूक पत्रकार थे। हालांकि उनके आगे राजनीतिक स्वतंत्रता, सामाजिक समरसता, अंधविश्वास और अन्य प्रचलित कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष का एक स्पष्ट लक्ष्य था। फिर भी वे पत्रकारिता को स्वराज– प्राप्ति का एक कारगर जरिया मानते थे। राष्ट्रीय नेताओं के निर्देश, स्वराज–प्राप्ति का एक कारगर जरिया मानते थे। राष्ट्रीय नेताओं के निर्देश को स्वराजप्राप्ति की नीतियों और कार्यक्रमों के प्रचार का सबसे सशक्त माध्यम उन्हें पत्रकारिता ही जान पड़ती थी। एक सधे हुए पत्रकार या रचनाकार के शब्द दूर तक अपनी पहुँच बनाते थे।

संदर्भ

1. शर्मा, अश्विनी कुमार. विप्लवी विस्मृत, 'सखाराम गणेश देउस्कर'. भूजेन्द्र भारत. पृष्ठ **39.**
2. 'पं० सखाराम. (2010). पत्रकारिता में प्रखर, प्रयोजनीय'. उमेश कुमार. 'प्रभात खबर' 'देवघर'. संस्करण– शुक्रवार. 17 दिसम्बर. पृष्ठ **6.**
3. शर्मा, अश्विनी कुमार. विप्लवी विस्मृत, 'सखाराम गणेश देउस्कर'. भूजेन्द्र भारत. पृष्ठ **39.**
4. (2006). 'देश की बात', पं० सखाराम गणेश देउसकर रचित पुस्तक का बाबूराव विष्णु पराड़कर द्वारा किया गया हिन्दी अनुवाद. प्रकाशक. नेशनल बुक ट्रस्ट. पृष्ठ **8.**
5. शर्मा, अश्विनी कुमार. विस्मृत विप्लवी, 'सखाराम गणेश देउसकर', भूजेन्द्र भारत. पृष्ठ **40.**
6. वही.
7. वही. पृष्ठ **66.**
8. कुमार, उमेश. (2010). 'इस सण्डे हों देशेरकथा से रु–ब–रु'. 'प्रभात खबर' 'देवघर'. संस्करण. रविवार. 7 नवम्बर. पृष्ठ **4.**
9. शर्मा, लीलाधर. भारतीय चरित कोश. 'पर्वतीय'. प्रकाशक शिक्षा भारतीः मदरसा रोड, कश्मीरी गेट दिल्ली. पृष्ठ **882.**
10. 'वरिष्ठ स्वतंत्रता सेनानी पटनायक, प्रफुल्लचन्द्र., प्रियदर्शी, राहुल. (1992). 'दुमका–दर्पण' साप्ताहिक/वार्षिक विशेषांक. संपादक मधुसूदन 'मधु'ः जिला स्कूल रोड, दुमका. अंक 24 से 31 अगस्त. पृष्ठ **17.**
11. कुमार, उमेश. (1992–93). मधुपुर के शायर जनाब अख़्तर मधुपुरी से सन् 1992–93 ई० में. 'देवघर' द्वारा लिए गए एक साक्षात्कार का अंश।
12. कुमार, संजीत. (1855–1947). राष्ट्रीय चेतना के उद्भव में पत्रकारिता की भूमिका– संताल परगना के संबंध में. सिदो कान्हु मूर्मू विश्वविद्यालयः दुमका, झारखंड।